मैया मैं नहिं माखन खायो

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कवि परिचय -- सूरदास और वात्सल्य रस

» कृष्ण की सफ़ाई -- 'मैया मैं नहिं माखन खायो'

» कृष्ण के चतुर तर्क -- हाथ छोटे, दोस्तों ने बहकाया

» यशोदा माँ का वात्सल्य -- भोली माँ का प्रेम

» पद की रचना -- तुक (rhyme) की विशेषता

» ब्रजभाषा के शब्द-रूप और कठिन शब्द

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. सूरदास की रचनाओं की मुख्य विशेषता क्या है?

› वे ब्रजभाषा में रचनाएँ लिखते थे
› उनकी अधिकतर कविताओं में श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन है
› ये रचनाएँ आज भी बहुत लोकप्रिय हैं और प्रेम से गाई जाती हैं

उत्तर – सूरदास की रचनाओं की मुख्य विशेषता यह है कि वे ब्रजभाषा में लिखी गई हैं और इनमें श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का बहुत ही मनोहारी और लोकप्रिय वर्णन मिलता है।

उदाहरण 2. कृष्ण ने अपनी माँ को क्या सफ़ाई दी कि वे माखन नहीं चुरा सकते थे?

› उन्होंने कहा सुबह होते ही उन्हें गायों के पीछे मधुबन भेज दिया गया
› वे पूरे दिन (चार पहर) बंसीवट में भटकते रहे
› शाम को ही घर लौटे, इसलिए माखन चुराने का समय ही नहीं मिला

उत्तर – कृष्ण ने कहा कि वे सुबह से शाम तक गाय चराने मधुबन और बंसीवट में रहे, इसलिए घर आकर माखन चुराने का उन्हें कोई मौका ही नहीं मिला।

उदाहरण 3. 'मैं माखन कैसे खा सकता हूँ?' इसके लिए श्रीकृष्ण ने क्या तर्क दिया? (पाठ्यपुस्तक का प्रश्न)

› पाठ्यपुस्तक में दिए विकल्पों में से सही उत्तर खोजें
› कृष्ण कहते हैं वे एक छोटे बालक हैं, उनकी बाहें छोटी हैं
› इसलिए वे ऊँचाई पर लटके छींके तक नहीं पहुँच सकते

उत्तर – श्रीकृष्ण का तर्क था कि उनके छोटे-छोटे हाथ (बहियाँ) छींके तक कैसे पहुँच सकते हैं -- यानी वे बहुत छोटे हैं, इसलिए माखन चुरा ही नहीं सकते।

उदाहरण 4. पद के अंत में यशोदा माँ ने क्या किया, और यह क्या दर्शाता है?

› कृष्ण की सारी सफ़ाई और शिकायतों (लाठी-कंबल वापस लेने की बात) के बाद
› यशोदा मुस्कुराईं ('बिहँसि')
› उन्होंने कृष्ण को अपने गले से लगा लिया ('कंठ लगायो')

उत्तर – पद के अंत में यशोदा मुस्कुराते हुए कृष्ण को गले लगा लेती हैं, जो दर्शाता है कि एक माँ का प्रेम सभी शिकायतों और तर्कों से ऊपर होता है।

उदाहरण 5. इस पद में 'तुक' का एक उदाहरण दें और बताएं कि तुक किसे कहते हैं।

› तुक का अर्थ है पंक्तियों के आखिरी शब्दों की समान ध्वनि

› पद में 'पठायो' और 'आयो' शब्दों की आखिरी ध्वनि एक समान है

› यह पूरे पद में हर पंक्ति के अंत में दोहराया गया है

उत्तर – 'तुक' का अर्थ है पंक्तियों के अंतिम शब्दों की समान ध्वनि; इस पद में 'पठायो' और 'आयो' शब्द इसका उदाहरण हैं।

उदाहरण 6. 'छींको' और 'बंसीवट' शब्दों का अर्थ बताएं।

› 'छींको' एक गोल पात्र के आकार का रस्सियों से बुना जाल है, जो ऊँची जगह पर लटकाया जाता है ताकि खाने की चीज़ें सुरक्षित रहें

› 'बंसीवट' एक वट वृक्ष है, जहाँ माना जाता है कि कृष्ण बाँसुरी बजाकर गायों को बुलाते थे

उत्तर – 'छींको' का अर्थ है ऊँचाई पर लटका हुआ जाल जिसमें दूध-दही जैसी चीज़ें रखी जाती थीं, और 'बंसीवट' उस वट वृक्ष का नाम है जहाँ कृष्ण बाँसुरी बजाते थे।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• कवि परिचय में 'ब्रजभाषा' और 'बाल-लीलाओं का वर्णन' -- दोनों शब्द ज़रूर शामिल करें, यह उनकी पहचान है।

• 'भोर भयो', 'साँझ परे' जैसे शब्दों का अर्थ (सुबह होना, शाम होना) याद रखें, शब्दार्थ में पूछे जा सकते हैं।

• बहुविकल्पी प्रश्न में 'मेरे छोटे-छोटे हाथ छीके तक कैसे जा सकते हैं' वाला विकल्प ही सही उत्तर है, इसे ध्यान से पहचानें।

• 'यशोदा माँ ने श्रीकृष्ण को हँसते हुए गले से क्यों लगा लिया' जैसे प्रश्न में हमेशा 'माँ का वात्सल्य/निश्छल प्रेम' शब्द का उपयोग करें।

• 'तुक' का उदाहरण देते समय हमेशा पद से सीधे दो शब्द (जैसे पठायो-आयो) उद्धृत करें, सिर्फ़ परिभाषा काफ़ी नहीं।

• 'पद में से कठिन शब्द चुनकर अर्थ लिखिए' जैसे प्रश्नों के लिए ऊपर दी गई शब्द-सूची को अच्छी तरह याद रखें, यह लगभग हर परीक्षा में आता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› सूरदास (15वीं-16वीं सदी) - ब्रजभाषा में श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं पर वात्सल्य रचनाएँ।

› कृष्ण का दावा: सुबह से शाम तक गाय चराने बाहर था, इसलिए माखन नहीं खाया।

› कृष्ण के तर्क: (1) मेरी बाहें छोटी हैं, छींके तक नहीं पहुँच सकता (2) ग्वाल-बाल दोस्तों ने ज़बरदस्ती मुँह पर माखन लपेटा।

› यशोदा भोली माँ हैं, बच्चों की बातों पर विश्वास करती हैं; अंत में प्रेम से कृष्ण को गले लगाती हैं।

› तुक = पंक्ति के अंतिम शब्दों की समान ध्वनि (जैसे पठायो-आयो); कवि का नाम अंत में आना = 'छाप'।

› ब्रजभाषा शब्द-रूप: पाछे=पीछे, कछु=कुछ, नहिं=नहीं; छींको, मधुबन, बंसीवट, गवाल-बाल जैसे कठिन शब्दों के अर्थ।